

पब्लिक फोरम : भारत-रूस सैन्य सहयोग

प्रसारण तिथि 23.01.2018

चर्चा में शामिल मेहमान
डॉ. रघुवंश सनिहा (वरिष्ठ पत्रकार)
रिटि. ले.ज. एस.के. सक्सेना (पूर्व डायरेक्टर जनरल-आरमी एंड एयर डफेंस)

एंकर- अनुराग पुनेठा

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-2: शासन व्यवस्था, संविधान, शासन प्रणाली, सामाजिक न्याय तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध
(खंड-18 : द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और भारत से संबंधित अथवा भारत के हितों को प्रभावित करने वाले करार)

संदर्भ व पृष्ठभूमि

कैसी भी परिस्थितियों क्यों न रही हों, रूस ने हमेशा से भारत का साथ दिया है; और यह मतिरता है केवल लेन-देन तक सीमिति नहीं है। इतिहास साक्षी है कि रूस हर परिस्थिति में भारत के साथ खड़ा रहा है। भारत और रूस के संबंध राजनीतिक व कारोबारी संबंधों से भी बढ़कर हैं और पाकिस्तान के साथ युद्ध के समय हमें रूस का पूरा सहयोग मिला और आज भी हमारी अधिकांश सैन्य साजो-सामान की आपूर्ति रूस से ही होती है।

भारत-रूस सहयोग संधि

9 अगस्त, 1971 को भारत ने रूस के साथ 20 वर्षीय सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किये थे। इनमें संप्रभुता के प्रति सम्मान और एक-दूसरे के हितों का ध्यान रखना, अच्छा पड़ोसी बनना और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व कायम करना शामिल है। 1993 में रूस और भारत ने शांति, मैत्री और सहयोग की नई संधि की, लेकिन उसका आधार भी इन्हीं बुनियादी सिद्धांतों को बनाया गया।

एस-400 एंटी मिसाइल रक्षा प्रणाली

- यह एक ऐसी एयर डफेंस मिसाइल प्रणाली है जो बाहरी मिसाइल हमलों से रक्षा करती है। यह संभावित मिसाइल हमले की तुरंत जानकारी देती है और ज़रूरत पड़ने पर एंटी मिसाइल दागकर दुश्मन की मिसाइल को मार गिराती है।
- इसकी सहायता से 600 कमी. तक की रेंज में ट्रैकिंग की जा सकती है।
- यह डफेंस सिस्टम एक समय में 400 कमी. की रेंज में 36 लक्ष्यों को नशाना बना सकता है।
- इस प्रणाली में लगे रडार एक साथ 100 से लेकर 300 लक्ष्यों को ट्रैक कर सकते हैं।
- इस सिस्टम में लगी मिसाइलें 400 कमी. तक मार कर सकती हैं।
- यह अमेरिका के सबसे उन्नत युद्धक विमान एफ-35 को गरिने की क्षमता रखता है।
- इस डफेंस सिस्टम से एक साथ तीन मिसाइलें दागी जा सकती हैं।
- इसमें मिसाइल से लेकर ड्रोन तक यानी इसकी रेंज में आने वाला कोई भी हवाई आक्रमण ध्वस्त करने की क्षमता है।
- इस डफेंस सिस्टम से विमानों, क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइलों के साथ-साथ जमीनी ठिकानों को भी नशाना बनाया जा सकता है।
- यह रूस की उस नई वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली का हिस्सा है, जो 2007 में रूसी सेना में तैनात की गई थी।
- चीन के पास पहले से यह डफेंस सिस्टम मौजूद है, जो उसने रूस से खरीदा था और चीन की सेना इसका इस्तेमाल कर रही है।

वार्षिक शिखर सम्मेलन और सैन्य अभ्यास

- रूस-भारत द्विपक्षीय संबंधों में वार्षिक शिखर बैठक अब एक स्थापित परंपरा बन गई है, जिससे लक्ष्यों को पूरा करने के लिये किये गए प्रयासों पर समयबद्ध तरीके से चर्चा का मौका मिलता है और साथ ही दोनों देशों को दीर्घकालिक लक्ष्यों को तय करने में आसानी होती है। अन्य क्षेत्रों में सहयोग के अलावा दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग भी बढ़ा है। दोनों देशों की थल सेनाएँ और नौसेनाएँ नियमित रूप से संयुक्त अभ्यास में हिस्सा लेती हैं।

- भारत अपनी नौसैनिक क्षमता बढ़ाने के लिये रूस पनडुब्बी लीज़ पर लेता रहा है, लेकिन उसके साथ कई प्रकार के अंतरराष्ट्रीय प्रतबंध लगे होते हैं। फलिहाल भारत के पास चीन की पाँच परमाणु पनडुब्बियों की तुलना में केवल दो पनडुब्बियाँ हैं। इसमें भी एक रूस से लीज़ पर ली हुई परमाणु पनडुब्बी आईएनएस चक्र है, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के मुताबिक परमाणु मसिाइल नहीं दागी जा सकती। इस तरह केवल 'अरहित' ही ऐसी परमाणु पनडुब्बी है, जिससे भारत परमाणु अस्त्रों का इस्तेमाल कर सकता है। अरहित के सेवा में आने के बाद भारत के पास स्थल, वायु और जल तीनों से परमाणु अस्त्रों के इस्तेमाल की क्षमता आ गई है, लेकिन पर ऐसी क्षमता चीन के पास पहले से ही है। भारत को रूस से जो दूसरी परमाणु पनडुब्बी मिलेगी, वह भी लीज़ पर ही होगी यानी उससे भी परमाणु हथियार नहीं दागा जा सकता। अकुला-II श्रेणी की यह पनडुब्बी 2020-21 तक भारत को मिलेगी, तब तक रूस से प्राप्त पहली परमाणु की लीज़ अवधि समाप्त होने वाली होगी। अगर इस बीच कोई और व्यवस्था नहीं होती तो कुल मिलाकर रूस की एक ही परमाणु पनडुब्बी भारत के पास रहेगी।

वमिनवाहक युद्धपोत

- भारत 1961 से वमिनवाहक युद्धपोत का संचालन कर रहा है, जबकि चीन को यह उपलब्धि 2012 में हासिल हुई। भारतीय नौसेना ने 1960 के दशक में अपना पहला वमिनवाहक युद्धपोत ब्रिटन से खरीदकर उसे आईएनएस विक्रान्त नाम दिया था। भारत ने इसे ब्रिटन की रॉयल नेवी से जब 1957 में खरीदा था, तब यह एचएमएस हरक्यूल्स के नाम से जाना जाता था। इसे 1961 में नौसेना में शामिल किया गया था और जनवरी 1997 में यह रटायर हो गया।
- इसके साथ ही भारत के पास दुनिया में सबसे अधिक समय तक सेवा देने वाला वमिनवाहक पोत आईएनएस वरिष्ठ भी था जो 2017 में रटायर हुआ। कुल 57 सालों तक सेवाएँ देने वाले इस पोत ने तीन दशकों तक भारतीय नौसेना में काम किया। एचएमएस हर्मीस के नाम से पहचाने जाने वाला यह पोत 1959 से ब्रिटन की रॉयल नेवी की सेवा में था। 1980 के दशक में भारतीय नौसेना ने इसे साढ़े छह करोड़ डॉलर में खरीदा था और 12 मई 1987 को सेवा में शामिल किया था।
- अब भारत अपना पहला स्वदेशी वमिनवाहक युद्धपोत आईएनएस विक्रान्त बना रहा है, इसका निर्माण 2009 में शुरू हुआ था जिसके 2023 तक पूरा होने की संभावना है। यह वमिनवाहक पोत 262 मीटर लंबा होगा और भारत का पहला स्वदेशी वमिनवाहक युद्धपोत होगा। 1997 में नौसेना से जिस आईएनएस विक्रान्त को सेवामुक्त किया गया था, उसी के नाम पर इसे तैयार किया जा रहा है। इसके अलावा भारत अपने दूसरे स्वदेशी वमिनवाहक युद्धपोत आईएनएस आकाश पर भी काम कर रहा है। परमाणु ऊर्जा संपन्न इस पोत की डिज़ाइनिंग रूस, फ्रांस, अमेरिका और ब्रिटन के सहयोग से 2012 में शुरू हुई थी और इसके 2025 तक नौसेना में शामिल होने की संभावना है।
- आईएनएस विक्रमादित्य: फलिहाल भारत के पास एक ही वमिनवाहक युद्धपोत है। भारत ने रूस के साथ एडमरिल गोरशकोव की खरीद के लिये बातचीत अक्टूबर 2000 में शुरू की थी और कई व्यवधानों और अवरोधों के बाद भारत की नौसेना में इसे आईएनएस विक्रमादित्य के नाम से 16 नवंबर, 2013 को शामिल किया गया। यह समुद्र में चलता-फरिता 283.5 मीटर लंबा-यानी फुटबाल के तीन मैदान के बराबर अभेद्य कलिा है। 20 मंज़िला इमारत जतिना ऊँचा...44,500 टन भारी। 30 युद्धक वमिनो को ले जाने की क्षमता से लैस आईएनएस विक्रमादित्य पर लंबी दूरी के अत्याधुनिक एयर सर्वाइलेंस रडार लगे हुए हैं, जिनसे यह अपने चारों तरफ 500 कमी. के इलाके की नगिरानी कर सकता है। इस पर 6 डीज़ल जनरेटर लगे हैं, जिससे 18 मेगावॉट बजिली मिलती है। इतनी बजिली से यूरोप एक छोटा शहर रोशन हो सकता है। इस वमिनवाहक पोत पर एक समय में 1600 से 1800 नौसैनिक मौजूद रहते हैं।

(टीम दृष्टि इनपुट)

सैन्य उपकरण उत्पादन सहयोग

बहुउद्देशीय हथियारों और सैन्य उपकरणों के उत्पादन में दोनों देश सघन सहयोग करते हैं। सुपरसोनिक करुज मसिाइल 'बरहमोस' को मलिकर बनाना दोनों देशों के बीच सैन्य संबंधों में विश्वास का परिचायक है। सैन्य और तकनीकी सहयोग के ढाँचे के भीतर 1960 के बाद से 2016 तक 65 अरब डॉलर से ज़्यादा के कॉन्ट्रैक्ट हो चुके हैं। ऑर्डर भी 2012 से 2016 के बीच 46 अरब डॉलर से अधिक हो गए हैं। अंतरराष्ट्रीय मामलों में रूस और भारत बराबर के सहयोगी हैं। दोनों देश अंतरराष्ट्रीय संबंधों में बहुध्रुवीय लोकतांत्रिक प्रणाली का समर्थन करते हैं, जिसमें कानून के सिद्धांतों के साथ कड़ाई से पालन हो और संयुक्त राष्ट्र की केंद्रीय भूमिका हो। हम इसके लिये तैयार हैं कि इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों और खतरों का और मलिकर मुकाबला करें, एकजुटता के अजेंडे को बढ़ावा दें और ग्लोबल और क्शेत्त्रीय सुरक्षा को बनाए रखने में योगदान दें।

पाँचवीं पीढ़ी का युद्धक वमिन

भारत और रूस ने 2007 में पाँचवीं पीढ़ी के युद्धक वमिन (Fifth Generation Fighter Aircraft-FGFA) को मलिकर बनाने के लिये अंतर-सरकारी समझौते पर हस्ताक्षर किये थे। इस परियोजना पर प्रगति काफी धीमी है क्योंकि यह बेहद जटिल मामला है।

- अरबों डॉलर की इस परियोजना के पीछे रूस का उद्देश्य भारत को अमेरिका, इज़राइल तथा अन्य पश्चिमी देशों से युद्धक वमिन खरीदने के बजाय रूस के सहयोग से निर्मित जेट वमिन खरीदने के लिये प्रेरित करना है।
- दोनों देश युद्धक वमिन के डिज़ाइन पर मलिकर काम कर रहे हैं, जिसमें भारत की हदिसतान एरोनॉटिक्स लमिटेड और रूस की सुखोई डिज़ाइन ब्यूरो शामिल हैं।
- इस सह-निर्माण के तहत भारत और रूस अगले 10 साल में 200-300 पाँचवीं पीढ़ी के युद्धक वमिन बनाएंगे।
- इस परियोजना के तहत पाँचवीं पीढ़ी के युद्धक वमिन के परीक्षण रूस में शुरू हो चुके हैं, जो अमेरिका के नवीनतम एफ-22 रैप्टर से प्रतस्पर्द्धा करेगा।
- ध्वनि से तेज़ रफ्तार से उड़ने वाला पाँचवीं पीढ़ी का पीएके-एफएटी-50 वमिन 5500 कमी. तक लगातार उड़ सकता है और इसके इसी वर्ष (2018) रूसी वायुसेना में शामिल करने होने की संभावना है।
- फलिहाल, अमेरिका का एफ-22 पाँचवीं पीढ़ी का दुनिया का एकमात्र युद्धक वमिन है और रूसी एफजीएफए अमेरिकी एफ-22 रैप्टर और एफ-35 लाइटनिंग 2 से प्रतस्पर्द्धा करेगा।

वर्तमान में भारत-रूस संबंध

- भारत और रूस ने अपने संबंधों की 70वीं वर्षगांठ मनाते हुए कहा था कि दोनों देशों के मध्य अटूट संबंधों का आधार परेम, सम्मान और दृढ़ विश्वास रहा है। लेकिन पछिले एक दशक से भारत-रूस के संबंधों में एक नरिशाजनक पैटर्न देखने को मलि रहा है। भारत और रूस शीतयुद्ध के दौर से एक-दूसरे के मतिर हैं और भारत अब भी अपने हथियारों का एक बड़ा हस्सिसा रूस से ही खरीदता है।
- लंबे समय तक भारत के रकषा बाज़ार में रूस का बड़ा हस्सिसा रहा है, लेकिन अब भारत एक देश पर पूरी तरह से नरिभर नहीं रहना चाहता। लेकिन पछिले कुछ वर्षों से भारत ने अन्य अलग देशों (अमेरिका, फ्रांस और इज़राइल) से हथियार खरीदना शुरू किया है और रूस को हथियारों के सौदे के मामले में कड़ी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ रहा है। हाल के वर्षों में अमेरिका और इज़राइल ने भारत से हथियार खरीद के जो सौदे हासलि किये, उसका सीधा नुकसान रूस को ही हुआ है।
- भारत को परमाणु सामग्रियों की आपूर्ति पर पाबंदी लगने से दोनों देशों के संबंधों को अतरिकित ऊर्जा मलिी और इसने परोक्ष रूप से हथियारों के व्यापार को भी प्रभावति कयि। तब रूस का प्रतस्पर्धी कोई नहीं था और भारत को आधुनकि सैन्य उपकरण चाहयि थे तथा रूस ही इनकी आपूर्ति कर सकता था।
- मॉस्को स्टेट इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल रलेशंस के वशिलेषक वकिटर मज़िनि कहते हैं कि भारत और रूस के रकषा संबंध मूलतः आपसी भौगोलकि-राजनीतिक हतियों के आधार पर नरिमति हुए हैं। तत्कालीन सोवयित संघ को जब चीन से परेशानी होने लगी तो भारत ने चीन को संतुलति कयि और यह कसिी से छपिा नहीं है कि भारत के संबंध भी चीन के साथ असहज ही रहे हैं।

(टीम दृष्टि इनपुट)

शीतयुद्ध के बाद भारत-सोवयित रणनीतिक साझेदारी

- चीन के खतरे को देखते हुए ही भारत और रूस एक-दूसरे के नकिट आए, लेकिन शीतयुद्ध के अंत के बाद चीन को अब अपनी सुरकषा के लयि रूस खतरा नहीं मानता।
- रूस द्वारा चीन के साथ सीमा वविाद के नपिटारे, आर्थकि और कारोबारी संबंधों में वसितार और रूसी हथियारों और रकषा प्रौद्योगिकियों का चीन एक प्रमुख आयातक होने के कारण भारत एवं रूस का चीन के प्रतिलग-अलग दृष्टिकोण है।
- चीन की वसितारवादी नीतियों और परमाणु शस्त्रागार में गुणात्मक वृद्धि के कारण रूस अभी भी चीन को लेकर बहुत सावधान रहता है। इसके अलावा चीन द्वारा मध्य एशयिा और पूरवी यूरोप में वकिसति कयि जा रहे चीनी मार्ग पर भी रूस को आपत्ति है, क्योकि दोनों ही कषेत्रों का सामरकि महत्त्व है। रूस की चीन के साथ वर्तमान नकिटता केवल सामरकि संबंधों के कारण बनी हुई है।

भारत क्या करे?

- भारत को रूस-चीन के नए और सकारात्मक संबंधों के साथ सामंजस्य बैठाने की आवश्यकता है। और चीन का सामना करने और पाकसितान के खिलाफ समर्थन प्राप्त करने के लयि केवल रूस पर नरिभर नहीं रहना चाहयि।
- रूस की वदिश नीति का मूल्यांकन करने पर पता चलता है कि रूस और चीन के मध्य सामरकि नकिटता बढ़ रही है। अतः भारत को इस वास्तवकिता को ध्यान में रखते हुए रूस के साथ अपने संबंधों को आगे बढ़ाना होगा।
- आज अमेरिका और भारत के सामने असली चुनौती चीन ही है। चीन को संतुलति करने के लयि अमेरिका और भारत को एक-दूसरे का साथ चाहयि, परंतु भारत को ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहयि जसि उसका पुराना वशिवस्त सहयोगी रूस पाकसितान और चीन के साथ खड़ा दिखाई दे। भारत को इन सबके बीच संतुलन कायम करना होगा।
- भारत की तरह रूस भी बहुधरुवीय वशिव का समर्थन करता है, लेकिन वह ऐसे वशिव की स्थापना नहीं चाहता, जसिकी अगुआई चीन करे। ऐसे में भारत को रूस के साथ दीर्घकालकि संबंधों के लयि एक व्यापक ढाँचा तैयार करने की आवश्यकता है। इसके लयि भारत को यूरेशयिन इकॉनमकि यूनयिन के साथ प्रस्तावति मुक्त व्यापार समझौते को आगे बढ़ाना चाहयि और एक सदस्य के रूप में शंघाई सहयोग संगठन में सक्रयि भूमकि नभिानी चाहयि। इन सब परस्थितियों को देखते हुए पूरवी यूरोप और मध्य एशयिा में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमकि का रूस द्वारा समर्थन कयि जा सकता है।

(टीम दृष्टि इनपुट)

नषिकरषः पूरव में सोवयित संघ और वर्तमान में रूस के साथ मज़बूत एवं प्रगाढ़ संबंध भारत की वदिश नीति का प्रमुख स्तंभ रहा है। भारत-रूस के बीच कई कषेत्रों में व्यापक सहयोग हुआ है और आपसी संबंधों को वसितार मलिा है। दोनों देश तेज़ी से वकिसति हो रहे वशिव भू-राजनीतिक परदृश्य में यथार्थवादी आधार पर मलिकर कार्य करने पर सहमत हैं। अंतरराष्ट्रीय मामलों में रूस और भारत बराबर सहयोगी हैं और बहुधरुवीय लोकतांत्रकि प्रणाली का समर्थन करते हैं, जसिमें कानून के सदिधांतों का कड़ाई से पालन हो और संयुक्त राष्ट्र की केंद्रीय भूमकि हो।

दोनों देश 21वीं सदी की चुनौतियों और खतरों का मलिकर मुकाबला करने और वैश्वकि तथा कषेत्रीय सुरकषा को बनाए रखने में योगदान करने पर भी एकमत हैं। फलिहाल दोनों देशों के संबंध, वैश्वकि भू-राजनीतिक परस्थितियों में हुए परविरतनों के बावजूद स्थिर बने हुए हैं। इतिहास गवाह रहा है कि संकट का समय रहा हो या सुवधि का कालखंड, यदि कोई एक देश बनिा लाग-लपेट हमारे साथ खड़ा रहा तो वह रूस ही है। भारत के साथ सदा-सर्वदा एक शक्ति के रूप में रूस खड़ा रहा है और यह शक्ति दोनों देशों की मतिरता की शक्ति है।

